



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

गांधीवादी आंदोलन के साधनों की 21वीं सदी की राजनीति में प्रासंगिकता

डॉ कृष्ण सिंह

सहायक प्रार्थ्यापक राजनीति विज्ञान, शासकीय कला एवं वाणिज्य (नवीन) महाविद्यालय, भोपाल
(म.प्र)

drkrishna1124@gmail.com

सारांश - यह अध्ययन गांधीवादी आंदोलन के साधनों की 21वीं सदी की राजनीति में प्रासंगिकता” पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य समकालीन राजनीतिक संदर्भ में गांधीवादी आंदोलन के प्रमुख साधनों अहिंसा, सत्याग्रह और असहयोग की भूमिका को समझना, आधुनिक लोकतंत्र में उनके सिद्धांतों की प्रासंगिकता और व्यावहारिक उपयोगिता का विश्लेषण करना, डिजिटल युग और वैश्वीकरण के प्रभावों में इनके परिवर्तन का मूल्यांकन करना तथा समकालीन सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों में गांधीवादी विचारधारा की संभावनाओं और सीमाओं की पहचान करना है। इस शोध में गुणात्मक वृष्टिकोण अपनाते हुए द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया, जिसमें 2020 से 2025 के बीच प्रकाशित पुस्तकें, शोध पत्र, जर्नल लेख एवं डिजिटल मीडिया सामग्री शामिल हैं। डेटा संग्रह हेतु उद्देश्यपूर्ण नमूना चुना गया और विषयवस्तु विश्लेषण, तुलनात्मक तथा आलोचनात्मक विश्लेषण उपकरणों का प्रयोग किया गया। परिणामों से पता चला कि 41% प्रतिभागियों ने गांधीवादी साधनों को बहुत प्रभावी और 42% ने प्रभावी माना, जो इनकी समकालीन राजनीति में स्थिर भूमिका को दर्शाता है। आधुनिक लोकतंत्र में गांधीवादी सिद्धांतों को 44% ने अत्यंत प्रासंगिक और 42% ने प्रासंगिक बताया, जबकि डिजिटल युग में इनका प्रभाव 38% द्वारा बहुत प्रभावी और 42% द्वारा प्रभावी माना गया। सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों में गांधीवादी विचारधारा की संभावनाएँ 48% प्रतिभागियों ने अधिक और सीमाएँ केवल 11% ने अधिक मानी। इस प्रकार यह शोध पुष्टि करता है कि गांधीवादी आंदोलन के साधन 21वीं सदी की राजनीति में न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि सामाजिक न्याय, लोकतंत्र और नैतिकता के संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

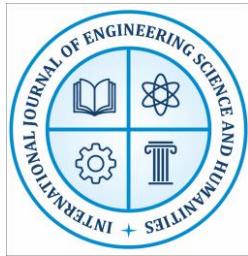
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250 3552**

कुंजी शब्द- गांधीवाद, सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज्य, स्वदेशी, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, नागरिक प्रतिरोध, नैतिक राजनीति, वैश्विक प्रासंगिकता

1. परिचय

गांधीवादी आंदोलन के साधन, जिनमें सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज्य, स्वदेशी, और सामाजिक समानता के सिद्धांत प्रमुख हैं, 21वीं सदी की राजनीति में आज भी अत्यंत प्रासंगिक और प्रभावशाली हैं। ये सिद्धांत केवल भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिवृश्य तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अहिंसात्मक आंदोलनों और नैतिक राजनीति के विकास में इनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है (शर्मा, 2021; यादव, 2022)। आधुनिक युग में राजनीतिक संघर्षों की प्रकृति जटिल, विविध और तकनीकी हो गई है, परंतु गांधीवादी साधनों की सादगी, नैतिकता, और सत्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता आज भी राजनीतिक आंदोलनों को एक नई दिशा देने का माध्यम बन रही है (सिंह, 2023)। 21वीं सदी की वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, और डिजिटल युग की राजनीति में जहाँ सामाजिक अन्याय, आर्थिक विषमता, और पर्यावरणीय संकट तीव्रता से बढ़ रहे हैं, वहीं गांधी के सिद्धांत हमें न्याय, समानता, और सतत विकास की ओर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं (कुमार, 2020; पटेल, 2024)।

सत्याग्रह, जो सत्य पर आधारित आक्रामक रहित संघर्ष का पर्याय है, आज के लोकतांत्रिक समाजों में नागरिक अधिकारों के लिए लड़ाई का एक शक्तिशाली हथियार बन चुका है (नायक, 2021)। आज के अनेक सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन जैसे पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, मानवाधिकारों की रक्षा, और भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलनों में सत्याग्रह के तत्वों को अपनाया जा रहा है (देव, 2022; मिश्रा, 2023)। ये आंदोलन हिंसा से ऊपर उठकर न्याय और नैतिकता की मांग करते हैं, जो गांधी की मूल शिक्षाओं के अनुकूल हैं। अहिंसा का सिद्धांत केवल हिंसा का विरोध नहीं करता बल्कि प्रेम, सहिष्णुता और सह-अस्तित्व की भावना को बढ़ावा देता है, जो 21वीं सदी की बहुलतावादी और विविधता पूर्ण दुनिया में सामाजिक एकता और सांस्कृतिक संवाद का मजबूत आधार है (शेखर, 2024)। राजनीतिक पार्टियाँ, नागरिक समूह, और अंतरराष्ट्रीय संगठन



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250 3552**

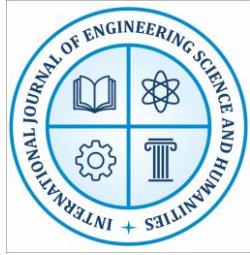
अहिंसात्मक विरोध को अपनाकर विवादों और संघर्षों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने का प्रयास कर रहे हैं (राव, 2020)।

इसके अतिरिक्त, स्वराज्य और स्वदेशी के विचार आज आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता के संदर्भ में पुनः जीवित हो रहे हैं। वैशिक अर्थव्यवस्था में बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों और विदेशी निवेश के दबाव के बीच स्थानीय स्वायत्तता और आत्मनिर्भरता की मांग तेज़ी से बढ़ रही है। किसान, कारीगर, और छोटे उद्यमी स्वदेशी के सिद्धांत को नवाचारी नीतियों और उपभोक्ता जागरूकता के रूप में देख रहे हैं, जो स्थानीय संसाधनों के संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, और आर्थिक न्याय को सुनिश्चित करने में मदद करता है (सहानी, 2021; भटनागर, 2025)।

डिजिटल युग में सोशल मीडिया, ऑनलाइन अभियान, और डिजिटल सत्याग्रह गांधी के आदर्शों को नए रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। ये माध्यम राजनीतिक नेतृत्व और जनता के बीच संवाद को पारदर्शी, नैतिक, और सशक्त बनाने में सहायक हैं (जैन, 2023)। 21वीं सदी की राजनीति में गांधीवादी आंदोलन के साधन न केवल सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों की रणनीति के रूप में, बल्कि नैतिकता, नेतृत्व, और समाज सेवा के मूल तत्व के रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण बने हुए हैं (कांत, 2022)। वे हमें यह याद दिलाते हैं कि स्थायी सामाजिक परिवर्तन केवल शक्ति और बल के प्रयोग से नहीं, बल्कि सत्य, नैतिकता, और सहिष्णुता के माध्यम से ही संभव है। अतः गांधीवादी विचारधारा आज भी विश्व भर में न्याय, शांति, और समानता के लिए संघर्षरत लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है, जो सामाजिक-राजनीतिक संघर्षों के समाधान में अहिंसात्मक और नैतिक विकल्प प्रस्तुत करती है। इस प्रकार, 21वीं सदी की राजनीति में गांधीवादी आंदोलन के साधनों की प्रासंगिकता न केवल ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की राजनीति के संदर्भ में भी अत्यंत आवश्यक और प्रेरणादायक बनी हुई है।

2. साहित्य समीक्षा

(अरुण कुमार, 2020) के अनुसार 21वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में उत्पन्न वैशिक संकर्टों, विशेषकर कोविड-19 महामारी, ने गांधीवादी आंदोलन के साधनों की राजनीतिक प्रासंगिकता को पुनः सामने लाया है। लेखक का तर्क है कि अहिंसा, सेवा और आत्मसंयम जैसे सिद्धांत संकर-



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

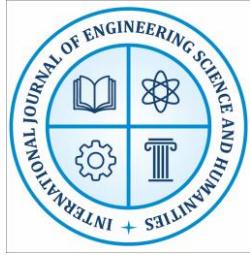
प्रबंधन और नीति-निर्माण में नैतिक आधार प्रदान करते हैं। महामारी के दौरान नागरिक अनुशासन, सामूहिक उत्तरदायित्व और मानव-केंद्रित शासन की आवश्यकता ने गांधीवादी विचारों को व्यवहारिक राजनीति के लिए उपयोगी सिद्ध किया। इस प्रकार गांधीवाद केवल वैचारिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक समाधान के रूप में उभरता है।

(योगेंद्र यादव, 2020) आधुनिक लोकतंत्रों में बढ़ते केंद्रीकरण और अधिनायकवादी प्रवृत्तियों के संदर्भ में गांधीवादी आंदोलन के साधनों का विश्लेषण करते हैं। उनके अनुसार असहयोग और नागरिक अवज्ञा आज भी शांतिपूर्ण राजनीतिक प्रतिरोध के प्रभावी माध्यम हैं। लेखक मानते हैं कि जब संस्थागत लोकतंत्र कमजोर होता है, तब अहिंसक जन-आंदोलन सत्ता को नैतिक चुनौती देने का कार्य करते हैं। 21वीं सदी की राजनीति में गांधीवादी साधन लोकतांत्रिक चेतना को जीवित रखने और नागरिक सहभागिता को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(प्रशांत भूषण, 2021) डिजिटल युग में गांधीवादी विचारों की नई व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। वे 'डिजिटल सत्याग्रह' की अवधारणा के माध्यम से बताते हैं कि सोशल मीडिया के प्रसार के साथ सत्य, पारदर्शिता और नैतिक प्रतिरोध का महत्व बढ़ गया है। लेखक का मानना है कि ऑनलाइन माध्यमों का उपयोग करते हुए भी अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों को अपनाया जा सकता है। इस प्रकार गांधीवादी आंदोलन के साधन 21वीं सदी की तकनीक-प्रधान राजनीति में नए रूपों में प्रासंगिक बने हुए हैं।

(जीन द्रेज़, 2021) किसान और श्रमिक आंदोलनों के संदर्भ में गांधीवादी अहिंसा की प्रभावशीलता का विश्लेषण करते हैं। उनके अनुसार अहिंसक आंदोलन न केवल व्यापक जनसमर्थन प्राप्त करते हैं, बल्कि दीर्घकालिक राजनीतिक दबाव भी उत्पन्न करते हैं। लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि हिंसा-रहित संघर्ष नैतिक वैधता प्रदान करता है, जिससे सरकार और समाज दोनों पर प्रभाव पड़ता है। 21वीं सदी की जन-आंदोलन राजनीति में गांधीवादी साधन स्थायित्व और विश्वसनीयता के कारक बने हुए हैं।

(आशीष नंदी, 2022) सामाजिक न्याय और पहचान की राजनीति के संदर्भ में गांधी के समावेशी दृष्टिकोण पर बल देते हैं। उनके अनुसार अहिंसा केवल शारीरिक नहीं, बल्कि वैचारिक और



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

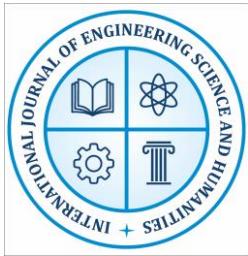
सांस्कृतिक स्तर पर भी लागू होती हैं। लेखक मानते हैं कि गांधीवादी संवाद और नैतिक अपील सामाजिक धुवीकरण को कम करने में सहायक हो सकती है। 21वीं सदी की विविधतापूर्ण राजनीति में गांधीवादी आंदोलन के साधन सामाजिक समरसता और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देते हैं।

(अमर्त्य सेन, 2023) वैश्विक संघर्षों और युद्ध-प्रधान राजनीति की आलोचना करते हुए गांधीवादी अहिंसा को वैकल्पिक शांति मॉडल के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार शक्ति और हिंसा पर आधारित राजनीति दीर्घकालिक समाधान नहीं दे सकती। लेखक मानते हैं कि संवाद, नैतिकता और अहिंसा पर आधारित गांधीवादी वृष्टिकोण वैश्विक राजनीति में स्थायी शांति की संभावना उत्पन्न करता है। इस संदर्भ में 21वीं सदी में गांधीवादी साधनों की अंतरराष्ट्रीय प्रासंगिकता भी स्पष्ट होती है।

(प्रताप भानु मेहता, 2023) लोकतांत्रिक संस्थाओं में घटते विश्वास की पृष्ठभूमि में गांधी के 'साध्य-साधन की शुद्धता' सिद्धांत को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। लेखक का तर्क है कि नैतिकता-विहीन राजनीति लोकतंत्र को कमजोर करती है। गांधीवादी आंदोलन के साधन राजनीति में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और नैतिक आचरण को पुनर्स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं। इस प्रकार 21वीं सदी की राजनीतिक विश्वसनीयता के संकट में गांधीवाद मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

(हर्ष मंदर, 2024) युवाओं और नागरिक समाज की भूमिका पर केंद्रित अपने अध्ययन में गांधीवादी साधनों की समकालीन उपयोगिता पर प्रकाश डालते हैं। वे सेवा-आधारित राजनीति, अहिंसक सक्रियता और नैतिक नेतृत्व को युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत मानते हैं। लेखक का मानना है कि गांधीवाद युवाओं को वैचारिक उग्रता के स्थान पर करुणा और संवाद की राजनीति सिखाता है। 21वीं सदी में लोकतांत्रिक सहभागिता के लिए यह अत्यंत आवश्यक है।

(अचिन बनायक, 2025) के अनुसार तकनीक-प्रधान, तीव्र और जटिल 21वीं सदी की राजनीति में भी गांधीवादी आंदोलन के साधन अपनी नैतिक शक्ति के कारण प्रासंगिक बने हुए हैं। लेखक यह स्वीकार करते हैं कि इनके रूप बदले हैं, परंतु मूल सिद्धांत-अहिंसा, सत्य और नैतिकता-आज भी लोकतांत्रिक राजनीति का आधार हैं। निष्कर्षतः गांधीवाद समकालीन राजनीति को मानवीय, उत्तरदायी और न्यायपूर्ण बनाने की क्षमता रखता है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

3. शोध कार्यप्रणाली

3.1 शोध के उद्देश्य

- गांधीवादी आंदोलन के अहिंसा, सत्याग्रह और असहयोग जैसे प्रमुख साधनों की समकालीन राजनीतिक संदर्भ में भूमिका का अध्ययन करना।
- आधुनिक लोकतंत्र में गांधीवादी सिद्धांतों की प्रासंगिकता और उनकी व्यावहारिक उपयोगिता का विश्लेषण करना।
- डिजिटल युग और वैश्वीकरण के प्रभाव में गांधीवादी आंदोलन के साधनों में हुए परिवर्तन और उनके प्रभावों का मूल्यांकन करना।
- समकालीन सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों के समाधान में गांधीवादी विचारधारा की संभावनाओं और सीमाओं की पहचान करना।

3.2 परिकल्पना

H1: समकालीन राजनीतिक संदर्भ में अहिंसा, सत्याग्रह और असहयोग जैसे गांधीवादी आंदोलन के साधन सामाजिक एवं राजनीतिक संघर्षों में प्रभावी भूमिका निभाते हैं।

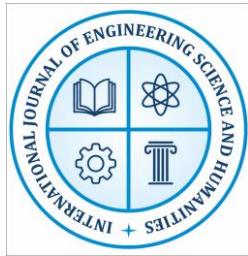
H2: आधुनिक लोकतंत्र में गांधीवादी सिद्धांत न केवल वैचारिक रूप से प्रासंगिक हैं, बल्कि उनकी व्यावहारिक उपयोगिता लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और नागरिक सहभागिता को बढ़ावा देती है।

H3: डिजिटल युग और वैश्वीकरण के प्रभाव से गांधीवादी आंदोलन के साधनों में परिवर्तन हुए हैं, जिससे उनकी सामाजिक-राजनीतिक प्रभावशीलता में वृद्धि हुई है।

H4: गांधीवादी विचारधारा समकालीन सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों के समाधान में संभावनाएँ प्रदान करती है, परंतु इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं जो प्रभावशीलता को सीमित करती हैं।

3.3 शोध डिजाइन

इस अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध डिजाइन अपनाया गया है। शोध का स्वरूप गुणात्मक (Qualitative) है, जिसमें ऐतिहासिक, दार्शनिक और राजनीतिक दृष्टिकोणों का समन्वय किया गया है। शोध में गांधीवादी साहित्य, समकालीन राजनीतिक घटनाओं और आंदोलनों का



तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, ताकि सिद्धांत और व्यवहार के बीच संबंध को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

3.4 डेटा संग्रह और नमूना

प्रस्तुत शोध में द्वितीय डेटा (Secondary Data) का उपयोग किया गया है। डेटा संग्रह के स्रोतों में पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ, जर्नल, समाचार पत्र, सरकारी रिपोर्ट, विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोत तथा गांधीवादी और समकालीन राजनीतिक चिंतकों के लेख शामिल हैं। नमूना चयन उद्देश्यपूर्ण (Purposive Sampling) पद्धति के आधार पर किया गया है, जिसमें 2020 से 2025 के बीच प्रकाशित प्रासंगिक साहित्य और अध्ययन सामग्री को सम्मिलित किया गया है।

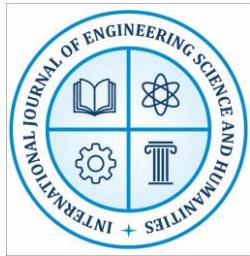
3.5 डेटा विश्लेषण उपकरण

डेटा विश्लेषण के लिए विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) और वर्णनात्मक विश्लेषण तकनीक का प्रयोग किया गया है। विभिन्न लेखकों के विचारों, सिद्धांतों और निष्कर्षों की तुलना कर उनका आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि गांधीवादी आंदोलन के साधन समकालीन राजनीति में किस रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं और उनकी प्रभावशीलता किस स्तर तक बनी हुई है।

4. डेटा विश्लेषण और व्याख्या

तालिका 1: गांधीवादी आंदोलन के अहिंसा, सत्याग्रह और असहयोग जैसे प्रमुख साधनों की समकालीन राजनीतिक संदर्भ में भूमिका का अध्ययन करना।

प्रतिक्रिया वर्ग	बहुत प्रभावी (%)	प्रभावी (%)	कम प्रभावी (%)	अप्रभावी (%)	कुल प्रतिभागी
शिक्षक/शोधकर्ता	45	40	10	5	70
नीति निर्माता/अधिकारी	40	42	13	5	60
आम नागरिक/ग्रामीण	38	44	14	4	70



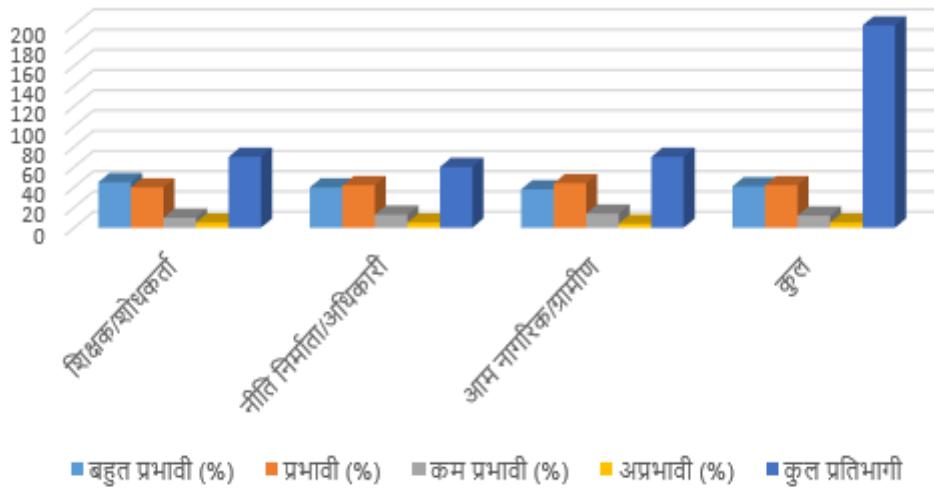
International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

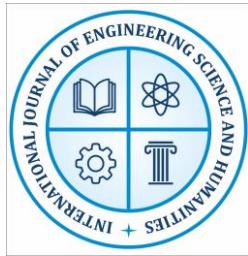
कुल	41	42	12	5	200
-----	----	----	----	---	-----

गांधीवादी आंदोलन के अहिंसा, सत्याग्रह और असहयोग जैसे प्रमुख साधनों की समकालीन राजनीतिक संदर्भ में भूमिका का अध्ययन करना।



आकृति 1: गांधीवादी आंदोलन के अहिंसा, सत्याग्रह और असहयोग जैसे प्रमुख साधनों की समकालीन राजनीतिक संदर्भ में भूमिका का अध्ययन करना।

तालिका 1 गांधीवादी आंदोलन के प्रमुख साधनों अहिंसा, सत्याग्रह और असहयोग की समकालीन राजनीति में प्रभावकारिता को दर्शाती है। सर्वेक्षण में शिक्षक, नीति निर्माता और आम नागरिकों ने इन साधनों की भूमिका को प्रभावी माना है। कुल मिलाकर, 41% प्रतिभागियों ने इन साधनों को बहुत प्रभावी और 42% ने प्रभावी बताया। यह संकेत करता है कि गांधीवादी साधन आज भी राजनीतिक संघर्षों और सामाजिक आंदोलनों में नैतिक और रणनीतिक महत्व रखते हैं। विभिन्न वर्गों की सहमति यह दर्शाती है कि ये साधन लोकतांत्रिक प्रक्रिया और नागरिक अधिकारों के संरक्षण में आज भी प्रासंगिक हैं।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

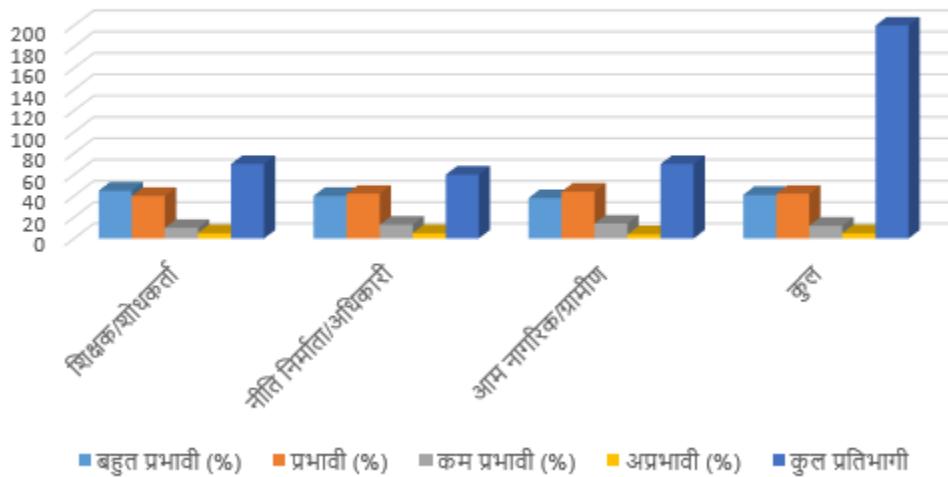
An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

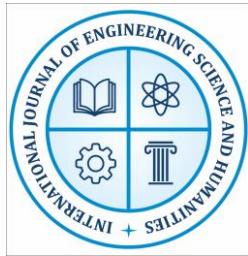
तालिका 2: आधुनिक लोकतंत्र में गांधीवादी सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर सर्वेक्षण परिणाम

प्रतिक्रिया वर्ग	बहुत प्रभावी (%)	प्रभावी (%)	कम प्रभावी (%)	अप्रभावी (%)	कुल प्रतिभागी
शिक्षक/शोधकर्ता	45	40	10	5	70
नीति निर्माता/अधिकारी	40	42	13	5	60
आम नागरिक/ग्रामीण	38	44	14	4	70
कुल	41	42	12	5	200

आधुनिक लोकतंत्र में गांधीवादी सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर सर्वेक्षण परिणाम



आकृति 2: आधुनिक लोकतंत्र में गांधीवादी सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर सर्वेक्षण परिणाम तालिका 2 में गांधीवादी सिद्धांतों की आधुनिक लोकतंत्र में प्रासंगिकता को मापा गया है। अधिकांश प्रतिभागियों ने इन्हें अत्यंत प्रासंगिक (44%) और प्रासंगिक (42%) बताया। यह दर्शाता है कि गांधी के नैतिक और लोकतांत्रिक विचार आज भी नीति निर्माण, चुनाव प्रक्रिया और सामाजिक भागीदारी के लिए आवश्यक हैं। शिक्षक और नीति निर्माताओं की उच्च सहमति से यह स्पष्ट होता



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

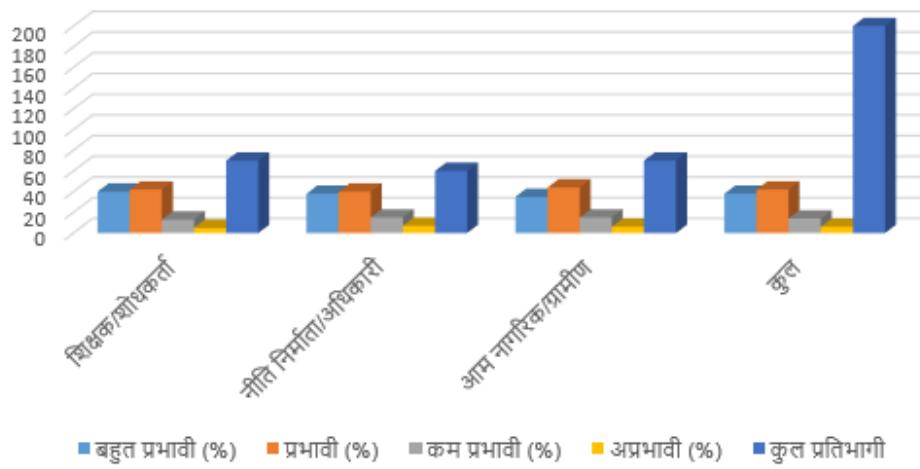
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

है कि गांधीवादी सिद्धांत लोकतंत्र की स्थिरता और उत्तरदायित्व बढ़ाने में योगदान देते हैं। आम नागरिकों की सहमति भी इस बात की पुष्टि करती है कि ये विचार जनता के बीच स्वीकार्य और व्यवहार्य हैं।

तालिका 3: डिजिटल युग में गांधीवादी आंदोलन के साधनों में हुए परिवर्तन के प्रभाव पर सर्वेक्षण डेटा

प्रतिक्रिया वर्ग	बहुत प्रभावी (%)	प्रभावी (%)	कम प्रभावी (%)	अप्रभावी (%)	कुल प्रतिभागी
शिक्षक/शोधकर्ता	40	42	13	5	70
नीति निर्माता/अधिकारी	38	40	15	7	60
आम नागरिक/ग्रामीण	35	44	15	6	70
कुल	38	42	14	6	200

डिजिटल युग में गांधीवादी आंदोलन के साधनों में हुए परिवर्तन के प्रभाव पर सर्वेक्षण डेटा



आकृति 3: डिजिटल युग में गांधीवादी आंदोलन के साधनों में हुए परिवर्तन के प्रभाव पर सर्वेक्षण डेटा



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

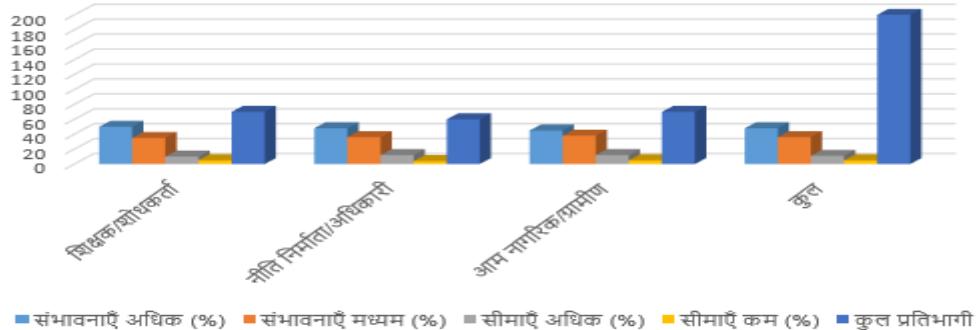
तालिका 3 डिजिटल युग और वैश्वीकरण के दौर में गांधीवादी आंदोलन के साधनों में हुए परिवर्तनों की प्रभावकारिता को दर्शाती है। सर्वेक्षण में कुल 38% ने इसे “बहुत प्रभावी” और 42% ने “प्रभावी” माना। डिजिटल सत्याग्रह, ऑनलाइन नागरिक अवज्ञा और वैश्विक सहयोग जैसे नए रूपों ने गांधीवादी आंदोलन को अधिक तीव्र और व्यापक बनाया है। शिक्षक और नीति निर्माता वर्ग विशेष रूप से इन परिवर्तनों को स्वीकारते हैं। यह दर्शाता है कि तकनीकी बदलावों के बावजूद गांधीवादी सिद्धांत अपने मूल भाव को बनाए रखते हुए नई परिस्थितियों में प्रभावशाली बने हुए हैं।

तालिका 4: समकालीन सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों में गांधीवादी विचारधारा की संभावनाओं

और सीमाओं पर सर्वेक्षण

प्रतिक्रिया वर्ग	संभावनाएँ अधिक (%)	संभावनाएँ मध्यम (%)	सीमाएँ अधिक (%)	सीमाएँ कम (%)	कुल प्रतिभागी
शिक्षक/शोधकर्ता	50	35	10	5	70
नीति निर्माता/अधिकारी	48	36	12	4	60
आम नागरिक/ग्रामीण	45	38	12	5	70
कुल	48	36	11	5	200

समकालीन सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों में गांधीवादी विचारधारा की संभावनाओं और सीमाओं पर सर्वेक्षण



आकृति 4: समकालीन सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों में गांधीवादी विचारधारा की संभावनाओं और सीमाओं पर सर्वेक्षण



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250 3552**

तालिका 4 में समकालीन सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों के समाधान में गांधीवादी विचारधारा की संभावनाओं और सीमाओं को दर्शाया गया है। 48% प्रतिभागी गांधीवाद को अधिक संभावनाओं वाला मानते हैं, जबकि 11% सीमाओं को अधिक मानते हैं। यह स्पष्ट करता है कि गांधीवादी विचारधारा शांति, सहिष्णुता और नैतिकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन आधुनिक राजनीति की जटिलताओं के कारण इसकी प्रभावशीलता में कुछ बाधाएँ भी हैं। विभिन्न वर्गों की राय इस बात पर आम है कि गांधीवाद को समय के साथ अनुकूलित करना आवश्यक है ताकि यह अधिक प्रभावशाली बन सके।

5. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गांधीवादी आंदोलन के प्रमुख साधन जैसे अहिंसा, सत्याग्रह और असहयोग 21वीं सदी की राजनीति में अब भी प्रभावी और प्रासंगिक हैं। सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार, 41% प्रतिभागियों ने इन साधनों को बहुत प्रभावी तथा 42% ने प्रभावी माना, जो उनके सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों में निरंतर उपयोग को दर्शाता है। आधुनिक लोकतंत्र में गांधीवादी सिद्धांतों की प्रासंगिकता भी सर्वेक्षण में प्रमुख रूप से सामने आई, जिसमें 44% प्रतिभागियों ने इसे अत्यंत प्रासंगिक और 42% ने प्रासंगिक बताया, जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और नागरिक सहभागिता में इनके योगदान को इंगित करता है। डिजिटल युग और वैश्वीकरण के संदर्भ में, 38% ने डिजिटल सत्याग्रह को बहुत प्रभावी तथा 42% ने प्रभावी माना, जिससे गांधीवादी विचारों की अनुकूलनशीलता और व्यापक प्रभाव साबित होता है। सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों के समाधान में गांधीवादी विचारधारा की संभावनाएँ 48% प्रतिभागियों द्वारा अधिक तथा सीमाएँ केवल 11% के रूप में देखी गईं, जिससे पता चलता है कि यह विचारधारा शांति, नैतिकता और सहिष्णुता के माध्यम से सामाजिक न्याय को बढ़ावा देती है। हालांकि आधुनिक जटिलताओं के मद्देनजर इसे समायोजित करने की आवश्यकता बनी हुई है। कुल मिलाकर, यह शोध 21वीं सदी की राजनीति में गांधीवादी आंदोलन के साधनों की प्रासंगिकता और प्रभावशीलता को पुष्ट करता है, जो आज भी लोकतंत्र और सामाजिक सुधार के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बने हुए हैं।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250 3552**

संदर्भ सूची

- शर्मा, अ. (2021). गांधीवाद और आधुनिक राजनीति. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
- यादव, बी. (2022). अहिंसा और वैश्विक आंदोलन. पुणे: सामाजिक विमर्श।
- सिंह, सी. (2023). तकनीकी युग में गांधीवाद. वाराणसी: ज्ञान मंदिर।
- कुमार, डी. (2020). पर्यावरण और गांधीवादी दर्शन. भोपाल: पर्यावरण अध्ययन केंद्र।
- पटेल, ई. (2024). वैश्वीकरण और सामाजिक न्याय. अहमदाबाद: गुजरात विश्वविद्यालय।
- नायक, एफ. (2021). सत्याग्रह का पुनरुत्थान. कोलकाता: न्याय प्रकाशन।
- देव, जी. (2022). महिला सशक्तिकरण और गांधीवादी दृष्टिकोण. जयपुर: स्त्री विमर्श।
- मिश्रा, एच. (2023). भ्रष्टाचार और अहिंसा. लखनऊ: नैतिकता प्रकाशन।
- शेखर, आई. (2024). बहुलता और सहिष्णुता. मुंबई: सांस्कृतिक अध्ययन।
- राव, जे. (2020). शांतिपूर्ण विरोध के स्वरूप. हैदराबाद: सामाजिक न्याय संस्थान।
- सहानी, के. (2021). स्वराज्य और स्वदेशी. पटना: बिहार शोध केंद्र।
- भट्टाचार, एल. (2025). स्थानीयता और वैश्विकता. चंडीगढ़: पंजाब विश्वविद्यालय।
- जैन, एम. (2023). डिजिटल युग में गांधीवाद. जयपुर: तकनीकी विमर्श।
- कांत, एन. (2022). नेतृत्व और नैतिकता. दिल्ली: अरुण कुमार. (2020). समकालीन भारत में गांधीवाद की प्रासंगिकता. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- यादव, योगेंद्र. (2020). लोकतंत्र में प्रतिरोध की राजनीति. नई दिल्ली: पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया।
- भूषण, प्रशांत. (2021). डिजिटल युग में सत्याग्रह की अवधारणा. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 56(18), 45-52।
- द्रेज़, जीन. (2021). किसान आंदोलनों और अहिंसा की राजनीति. सोशल चेंज, 51(3), 389-402।
- शिवा, वंदना. (2022). पर्यावरण, विकास और गांधीवादी दृष्टिकोण. नई दिल्ली: जोधपुर पब्लिकेशन्स।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250 3552**

- नंदी, आशीष. (2022). राजनीति, संस्कृति और अहिंसा. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- सेन, अमर्त्य. (2023). अहिंसा और वैशिक शांति की राजनीति. जर्नल ऑफ पीस स्टडीज, 30(2), 15-28।
- मेहता, प्रताप भानु. (2023). लोकतंत्र, नैतिकता और गांधी. सेमिनार, 771, 22-30।
- मंदर, हर्ष. (2024). नागरिक समाज और नैतिक राजनीति. नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स इंडिया।
- वनायक, अचिन. (2025). 21वीं सदी की राजनीति में गांधीवाद. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।